* आचार्य श्री विमर्शसागर काव्योदय प्रकाश *

"तर्ज- आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ, झांकी हिंदुस्तान की "

(आचार्य श्री के प्रवचनों / पुस्तकों से निकले विषयशब्दों/ भावों का सार काव्योदय प्रकाश में गूँथा गया है, जिसके अनुपालन / श्रवण /पठन पाठन /श्रद्धान /से पुण्य फल भक्त श्रावकों को मिलेगा।)

प्रदीप छंद (चौपाई चरण + दोहे का विषम चरण)

(1)•••• गुरु वंदना

गुरु विमर्श का बनूँ पुजारी , भक्ति कलश अब मानिए।
रचें काव्य हम शीष झुकाकर , महिमा गुरुवर जानिए॥
गुरु बतलाते सदा जगत को , कैसे वह गोविन्द है।
इसीलिए तो गुरु चरणों में , सुख " सुभाष" आनन्द है॥
गुरु को मानो सब पहचानो , गणधर गुरु गणेश हैं।
गुरु विशेष हैं इस दुनिया में, नभ में सदा दिनेश हैं॥
करता चर्चा यहाँ "सुभाषा , आतम हित कल्यान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(2)••••विश्वास

गहन अंधेरा जब होता है, कोई हमें निहारता।
हाथ अगर उस ओर बढ़ा दो , जो भी हमें पुकारता॥
गुरु विराग ने जिसको जाना , पुण्य जीव राकेश हैं।
जय विमर्श हम जिनको जाने, आज दिगम्बर वेश हैं॥
गुरू शिष्य को नमन यहाँ है , नमन यहाँ विश्वास है।
धन्य जतारा भूमि हुई है , पूजित हुआ प्रकाश है॥
माटी भी चंदन बन जाती , महिमा गुरू निधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~

(3)••••संस्कार

संस्कार सब जगते रहते , निद्रा रहती दूर है।
परिवारों में जब यह रहते , खिलता घर में नूर है॥
पारस आकर छू देता है , खिल जाते तब फूल हैं ।
निर्मल मन आगे चल देता , छोड़ यहीं जग शूल हैं॥
मिले राकेश गुरु विराग से, चरणों की रज चूमि थी।
नगर जतारा धन्य हुआ था, धन्य यहाँ तब भूमि थी॥
चरण कमल में पावन रस था , चर्चा है संज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~

(4)••••साधक
~~~~~~~~~~~~~~~~~

धर्म मार्ग में मात् पिता भी , सम्बल करें प्रदान जब।
साधक देखा दृड़ निश्चय का , होता है प्रतिमान तब ॥
राग तिरोहित करता जग में , वीतराग संज्ञान ले।
आतम का हित करता जग में, शुचिमय सदा विधान ले ॥
गुरु विमर्श की यही कहानी , बनी अमर इतिहास है।
अंधकार सब मोह छटा है , पल -पल मिला प्रकाश है ॥
महिमा सबने देखी है, हमने रचे विधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(5)•••आचरण

रखें सरल जो अपना बचपन , ज्ञान पिपासा राह की ।
वहाँ आचरण पावन रहते , बाती सम्यक चाह की ॥
जिज्ञाषायें पूरण होती , मिलता अभियुत्थान है।
ज्ञान चारित्र सम्यक दर्शन , सबका होता भान है ॥
गुरु विमर्श का जीवन जाना , सरल सहज प्रतिमान है।
वाणी से कोमलता झलके , कर्तव्यों का गान है ॥
गुरु का जीवन जो भी जाने , छटा देखता ज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(6)••••मृदुभाषी

मृदुभाषी जो रहता जग में , समझे जीवन सार है।
सार मानता सत्य यहाँ पर , बाकी सब व्यापार है ॥
चहल-पहल जो रहती जग में , राग द्वेश परिधान है।
वीर नाम से लगन लगी तो , सुखमय सदा वितान है ॥
उदाहरण हैं गुरु विमर्श जी , शुचिता की जो गंग हैं।
खुद में लगते धर्म तीर्थ हैं , अद्भुत खिलते रंग हैं ॥
चर्चा जन -जन भी करता है , शुभाशीष के गान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~ ~~~~~~~

(7)••••आराधन

गहन निराशा जिनको होती , आते जब व्यवधान हैं।
वीर नाम ही याद करें सब , मिटते चोट निशान हैं ॥
आराधन प्रभु का करते ही , मिलता सुख संतोष है ।
सदा कर्म के फल मिलते हैं , नहीं किसी का दोष है ॥
गुरु विमर्श जी करें इशारा , साहस सम्बल लीजिए।
वीर नाम का उच्चारण ही , सबसे पहले कीजिए ॥
रोग शोक सब मिटते जाएँ , बेला हो अवसान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(8)••••अंतराय

अंतराय की सीमा को भी , भोजन तक मत मानिए।
विघ्न और बाधा परिसीमा , इसमें ही पहचानिए ॥
कर्म उदय में जब आता है, नहीं किसी को छोड़ता।

वीर नाम का ध्यान सदा ही , संकट का रुख मोड़ता ॥
गुरु विमर्श जी इसमें तपकर , आज हमारे सामने ।
अंतराय का किया सामना , गुरुवर पूरा आपने ॥
नमन साधना हम सब करते , जय गुरुवर के ध्यान की ।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(9)••••नेतृत्व

बने काफिला उस राही का , जहाँ सत्य प्रतिविम्ब हो ।
मिले किनारा और सहारा , रखा धर्म अबलम्ब हो ॥
भक्ति भाव से रखकर श्रद्धा , जो सम्यक पहचानते ।
नहीं देखते कभी विफलता, जग पूरा वह जानते ॥
बनकर वह आतम कल्याणी, पाते सदा मुकाम हैं ।
गुरु विमर्श जी आज देख लो , एक अनूठे धाम हैं ॥
संघ आपका बना चतुर्विध , बात यहाँ संज्ञान की ।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(10)••••वाणी

मृदुता से ही सरगम बनता , फिर आगे शुचि गीत है ।
वाणी से अमरत झरता है , खिलती जग में प्रीत है ॥
असर दवा -सा सबने देखा , बोली बनती लेप है ।
रहे निरोगी मन की काया , बिखरे सुंदर क्षेप है ॥
गुरु विमर्श जी सरगम लगते , खुद में ही संगीत हैं ।
परिभाषा हम कहाँ बनाएँ , जब गुरुवर ही नीति हैं ॥
कौन बता सकता है महिमा ,अमरत के रस पान की ।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(11)••••साधना

तथ्य हृदय के अंदर रहते , सम्यक सब पहचानते ।
प्रस्तुति देते बोधगम्य है , श्रावक जिनको मानते ॥
ज्ञान गंग की गहराई में , खोजे रत्न अमूल्य है ।
जिनके दर्शन से हटते सब, भक्त जनों के शूल्य है ॥
तपो साधना गुरु विमर्श की, नमन करे संसार है ।
दिग्दर्शन आतम हित लगता,खुले मोक्ष का द्वार है ॥
दरिया बहती गुरु चरण से , सुंदर अद्भुत ज्ञान की ।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(12)••••भक्ति भावना

भक्ति भावना यहाँ जगत में , जब करती अनुपान है ।
खड़े सामने ब्रम्हा होते , देते वह वरदान है ॥
यह प्रतीक कहलाते जग में ,सब कुछ होता भक्ति से ।
सच मुकाम हासिल होते है , श्रद्धा की ही शक्ति से ॥
गुरु विमर्श की वाणी कहती , सदा सत्य संधान हो ।
मोक्ष पथिक के राही बनकर, सिद्ध शिला पर गान हो ॥

आदि ब्रम्ह में गणना करते , आदिनाथ भगवान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(13)•••••••मधुर वाणी

जहाँ मधुरता वाणी रखती , फल मिलता तत्काल है।
सुनने वाला भी झूकता है , होता वहाँ निहाल है॥
गूँगा भी रस मीठा जाने , चखता उसका स्वाद है।
भले नहीं वह कुछ कह पाए , पर रखता वह याद है॥
गुरु विमर्श है रस भंडारी , सबको देते पान है।
पीने वाला भी कह देता , अमरत लगे समान है॥
जो वाणी को सदा सम्हाले , पदवी मिले प्रधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की,जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(14)•••••अंतरंगता

अंतरंगता संसारी की , राग द्वेश अज्ञान है।
जिसे मिटाया सहज भाव से , वह सम्यक इंसान है॥
जहाँ मिथ्यात्व का डेरा है , कहलाता संसार है।
तेरा मेरा जो भी करता , पापों का व्यापार है॥
संसारी सत्ता रागों की , जिस पर चढ़ा सवार है।
बैठ नाव पर मानव डोले , जहाँ तेज मझधार है॥
गुरु विमर्श समझाते सबको ,राह चयन मुस्कान की।
जय विमर्श आचार्य प्ररवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(15)••••दान

कहें दान की महिमा गुरुवर , रयणसार पढ़ लीजिए ।
पात्रदान का रोचक वर्णन , पढ़कर चिंतन कीजिए॥
यदि कुपात्र को दान दिया तो , ऊसर बोए बीज है।
वाह -वाह को दान दिया तो , पाई तुमने खीज है॥
गुरु विमर्श जी कहते रहते, रखना सदा विवेक है ।
धर्म यतन में देना अच्छा , कहलाता सब नेक है॥
गुरुवर करते है मीमांशा , महिमा सम्यक दान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(16)•••••णमोकार मंत्र

णमोकार ही शरणभूत है , महामंत्र यह जानिए ।
मंगलकारी रहे सर्वदा , उत्तम जग में मानिए॥
नमस्कार है पंच जगत में , हर प्राणी को श्रेष्ठ है।
कल्याणी है निज आतम को , सब मंत्रों में ज्येष्ठ है॥
गुरु विमर्श जी कहते सबसे ,यह कल्याणी मंत्र है।
श्रमण और श्रावक को मानो , मोक्ष मार्ग का यंत्र है॥
णमोकार की महिमा गाते , है पूजा भगवान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(17)•••••••प्रवचन

संतो के जो प्रवचन सुनते, श्रावक नित्य अनेक हैं।
वह पृथ्वी के रहे देवता, रूप धरें नर एक हैं॥
संतो की वाणी कल्याणी, जो मानव यह जानते।
बोधि समाधि उनको मिलती ,जो सम्यक पहचानते॥
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, जिनवाणी का सार है।
सप्त तत्व का वर्णन जिसमें, श्रावक को सुखकार है॥
भेंट अमोलक जय जिनवाणी, गुरु विमर्श संज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की,जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(18.) समाधि मरण

मरण समाधिस वह होते है, जो संसारी भव्य है।
वीर प्रभु आराधन में जो, ध्यान मग्न इकलव्य है॥
जन्म मरण का वंधन छूटे, जो भरते यह भावना।
कर्म निर्जरा उनके होते, पूरण होती कामना॥
रणयोदय में गुरुवर लिखते, भला किया यदि अंत है।
मोक्ष राह में आस पास तब, खिलता सदा वसंत है॥
गुरु विमर्श की वाणी शुभकर, हितकर है संज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(19.) शुद्धोपयोग

रागी बनकर जुटा रहा जो, वह कोल्हू का बैल है।
गर्दभ बनकर जिए जिंदगी, ढ़ेर लगा वह मैल है॥
पापा बनना बहुत सरल है, लगे कठिन परमातमा।
सम्भव सब हो सकता जग में, यदि ठानें निज आतमा॥
शुद्ध कर्म सब करो बंधुओ, शुचिता रखना राह में।
वचन मिले माँ जिनवाणी के, कमी न रखना चाह में॥
गुरु विमर्श की अमरत वाणी, चर्चा है श्रद्धान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की,जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(20.) वैराग्य

रागी ही बनता वैरागी, मिलते भी संयोग हैं।
जो अवसर का हाथ पकड़ता, मिट जाते सब भोग हैं॥
श्रमण और श्रावक पहचाने, श्रमण स्वयं प्रतिविम्ब है।
श्रावक को दिग्दर्शन देने, श्रमण यहाँ अवलम्ब है॥
भरत बने वैरागी घर में, अबलम्वन श्री राम थे।
कार्य राज का करते जाते, भावों से निष्काम थे॥
परिभाषा दें गुरु विमर्श जी, वैरागी अनुपान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(21) विकार

राग द्वेश मद मोह बताते , जग में यहाँ विकार है।
सुख अनंत जो निज आतम में , उन पर यह तलवार है ॥
शीत काल में शीतल पानी , पीना है अज्ञानता।
हैं कषाय सब जहर डालियाँ, कौन -कौन है जानता ॥
सदा आश्रय उसका लेते , जो बन जाते कष्ट हैं।
भ्रमित करें वह निज जीवन , कभी न होते नष्ट हैं ॥
गुरु विमर्श संकेत यहाँ पर , चर्चा करें निदान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(22) निर्ग्रंथ

ग्रंथ पढ़ो निर्ग्रंथ बनो सब , मोक्ष मार्ग पहचानिए।
गुरुमुख से जिनवाणी सुनकर, निज आतम को जानिए ॥
अर्थ यहाँ निर्ग्रंथ बताते , नहीं परिग्रह लेश हो।
पिछी कमंडल धारी होकर , यहाँ दिगम्बर वेश हो ॥
श्रावक बाह्य परिग्रह रखते , संग्रह का भी जोश है।
लेश मात्र जब दूर रहे तृण , श्रमण तभी निर्दोष है ॥
कठिन साधना निर्ग्रंथों की , ऊँचाई सौपान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की,जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(23) सौभाग्य

जिनवाणी सौभाग्य जानिए , जिन मुनिवर सौभाग्य हैं ।
जिन मंदिर सौभाग्य हमारे , पंच महाव्रत जाग्य हैं ॥
राग हमारा शुचि प्रशस्त है , धर्म यतन जब साथ हैं ।
सौभाग्य हमारे सभी यज्ञ हैं , दान दया के हाथ हैं ॥
जहाँ धर्म का पालन होबे , जगह वहाँ सौभाग्य है।
नर तन पाया सौभागी हो , श्रेष्ठ राग का त्याग्य है ॥
गुरु विमर्श जी करें व्याख्या , सौभागी सौपान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(24) धर्मात् सुखम्

मंगलकारी धर्म देखिए , जहाँ आचरण रूप है।
मिलता सुख जो हृदयांतर में , होता दिव्य अनूप है ॥
हटे अमंगल मन में छाया , मंगल मूरत दर्श हो।
मंगल होते हाथ हमारे , पूजा हित स्पर्श हो ॥
संकट विकट जहाँ पर होता , धर्म सहायक मानिए।
धर्म हमेशा जीवन में अब , सुखमय गाथा जानिए ॥
गुरु विमर्श हैं मंगलकारी , दर्शन धर्म प्रधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(25) ब्रम्हचर्य

ब्रम्हचर्य का पालन करना , तप जैसा ही यज्ञ है।
आत्म शुद्धि ही करते रहना , ध्यान यहाँ पर विज्ञ है॥
मन विकार सब दूर हटाना , संयम के सौपान से।
राग द्वेश सब यहाँ छोड़ते , सदा आचरण गान से॥
त्याग हमेशा अपनाते हैं , शुचिता के परिवेश में।
निज चेतन को करें परिष्कृत, अपने निजी हृदेश में॥
गुरु विमर्श जी कहते सबसे , टूटे कड़ियाँ मान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(26) शुद्धि

वचन काय मन शुद्ध रखे जो , सम्यक सभी प्रसंग है।
जिन पूजा -दर्शन-मुनि चर्या, के समझो यह अंग हैं ॥
निज जीवन में जहाँ साधना , यह उसका आरोह है।
तन नहलाकर शुद्धि बोलना , ऊपर का व्यामोह है॥
रखे शुद्धि जो हृदयांतर में, वचन कर्म व्यवहार में ।
शुचिता उसकी रहे झलकती, चंदा -सी संसार में॥
पाप गला दे मन निर्मल हो , समझों बात निदान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(27.) मंगल

मंगल जग में चार बताए , उत्तम शरण भी मानिए।
अरिहंत सिद्ध साधु हैं मंगल, और केवली जानिए॥
और जगत में मंगल मानो , जिन मंदिर सुखकार है।
जिनवाणी भी मंगल करती , जिन पूजा भी सार है॥
धर्म ध्यान शुभ मंगल होता , मंगल जिन आधार है।
दान दया करुणा सब मंगल , मंगल तीरथ द्वार है॥
मुख्य-गौड़ भी कह सकते है,मंगल कृपा निधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(28.) पुण्य

मोक्ष मार्ग की करे साधना , पुण्य सातिशय जानिए।
जीवों को सुख साधन मिलवें , वैभव सँग में मानिए॥
भोगों में आसक्त नहीं हैं , उन्हें मुक्ति का द्वार है।
पुण्य प्रवल यह होता जग में , जब शुचिता व्यवहार है॥
पुण्य निरतिशय वह होता है ,जो करते उपकार हैं।
नहीं निजातम देखा करते , पर करुणा की धार हैं॥
रणयोदय में लिखते गुरुवर , यह सब बातें ज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(29.) कर्म फल

अशुभ और शुभ कर्म करें हम , फल बैसा आकार में।
पककर पूरा मिलता हमको , रहता नहीं उधार में॥
रणयोदय में कथा लिखी है , जय विमर्श गुरुदेव ने।
छोड़ा नहीं सुभौम राज को , कर्मों के परिवेश ने॥
अच्छे को अच्छा फल मिलता , बुरा विषैला बीज है।
कपटी लोभी जब छल करते,मिलती उनको खीज है॥
शुभाचरण भी मंगल करते , पाते कृपा निधान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(30.)निमित्त और फल

रणयोदय में गुरुवर लिखते , शुभ निमित्त सब सार है।
जहाँ शास्त्र की रचना होती , वाणी प्रभु उपकार है॥
समझों अब उद्देश्य यहाँ पर , हेतु अर्थ, फल मानिए।
जब निमित्त हो शुभ उपकारी, कारण उसका जानिए॥
प्रत्यक्ष यहाँ फलता भी दिखता,और परोक्ष शुभ गान है।
अभ्युदय और मोक्ष सुख , यहाँ परोक्ष प्रतिमान है॥
गहन तथ्य है कथ्य सार है , किरणें ज्यों दिनमान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(31.)मंगलाचरण गीत

सही मंगलाचरण जानिए , कैसा शुभ व्यवहार है।
नमस्कार हो परमेष्ठी को , तभी मंगलाचार है॥
भजन सुना दो कोई भी तुम , यह सब लोकाचार है।
या समझों आई मजबूरी, गान किया तैयार है॥
कोशिश करना यहाँ चाहिए , पद परमेष्ठी गान हो।
शुभ मंगल जब कारज होवें , पाँच पदों का मान हो॥
नहीं पूर्ति लय मंगल होती, किसी तरह के गान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(32.)जिनागम पंथ

समोशरण में जिनवर कहते , फिर गणधर हैं बोलते।
जयदु जिणागम पंथो कहकर , कुंदकुंद मग खोलते॥
प्रचर गमय पथ राह मार्ग सब , सभी एक ही नाम है।
जिनवर जिनवाणी पहचानो , यह सुनेक ही काम है॥
गुरु विमर्श जी राह दिखाते, सच्चे ज्ञान प्रकाश की।
जिनवर जिस पर चलकर पहुँचें, रहते वहाँ उजास की।
आतम हित के तथ्य सभी हो , शुभ चर्या संज्ञान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(33.) पर्याय
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

नर तन मिलना दुर्लभ होता , फिर दुर्लभ कुल जैन है।
लिया जैन कुल जन्म यहाँ तब, दुर्लभ मन का चैन है ॥
देव शास्त्र गुरु दुर्लभ होते , जो भटका है राह से।
सम्यक दर्शन जिसने कीन्हा , ज्ञान मिले तब चाह से ॥
सम्यक चारित गहना जिनका , परिवर्तन तब साधना।
मोक्ष महल तक ले जाती है , उसकी शुचिमय भावना ॥
मानव की पर्याय साध लो , नजर रखो पहचान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की , जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(34.) सुख - दुख

निर्ग्रंथ तपोधन सुख जाने , रागी दुख भंडार है।
जीवन मूल्य समझना सुखमय , दुखी यहाँ संसार है ॥
जहाँ आचरण शुचिमय होते , सुखी वहाँ पर लोग हैं।
मौज उड़ाना जो भी माने , दुखिया बाले रोग हैं।
जिनवर वाणी -गुरु को माने , वह विरले ही जीव हैं।
ध्यान साधना जो भी करते , बनते ब्रम्ह अतीव हैं ॥
बात न दुखिया माने कोई , गुरुवर कहें निदान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(35.) धर्मोपदेश

आगम वाणी सम्यक बोले , देय धर्म उपदेश हैं।
प्रवचन उसके हृदय उतरते , मिटते मन के क्लेश हैं ॥
रागी वाणी कभी नहीं कुछ , कर सकती उपकार है।
जिसमें सम्मोहन संसारी , या करते व्यापार है ॥
जिनवाणी सुनना -कहना भी , यह प्रभाव के अंग हैं।
मनवाणी जो थापित करते , उनकी राह अपंग हैं ॥
गुरु विमर्श समझाते सबको , राह दिखा कल्यान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की ,जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(36.) मौखर्यता

अधिक मुखर होकर जो ज्ञानी , बन जाता वाचाल है।
वहाँ मौखर्यता आ जाती , नहीं बचाने ढाल है ॥
नूपुर पैरौ में बँधता है , समझों सब संकेत को।
अधिक मिले फसलों को पानी,क्षति पहुँचाता खेत को ॥
सोच समझकर थोड़ा बोलो , मितभाषी संज्ञान हो।
कम शब्दों में सार कथन हो , मृदुता की पहचान हो ॥
गुरु विमर्श महिमा बतलाते , लघुभाषी उत्थान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की ॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

गरु चरणों में -

रणयोदय में गुरु विमर्श के , यह सब लेखन अंश हैं।
कुछ प्रवचन से सुनकर के भी, बने यहाँ पर हंस हैं॥
नमन "सुभाषा" करता है अब , गुरु शरण अब दीजिए।
मेरा इसमें नहीं लगा कुछ , अपनी थाथी लीजिए॥
यही कामना सदा हमारी , सदा रहे आशीष अब।
मेरे गुरुवर मेरे सब कुछ , मेरे हो जगदीश अब॥
है प्रदीप यह छंद सुखारे , गाथा शुभ श्रद्धान की।
जय विमर्श आचार्य प्रवर की, जिन आगम विज्ञान की॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

लेखक / कवि -सुभाष सिंघई (एम०ए० हिंदी साहित्य)
जतारा (टीकमगढ़) म०प्र० _ मोबा० 9584710660
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~